RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.09 | September 2021 | pp. 105-107
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

'आखिरी छलांग' उपन्यास में चित्रित कृषक जीवन

*शिवाली शर्मा

पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), सेट, हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू – 180006

Abstract

ग्रामीण समाज और कृषि भारत का अभिन्न अंग हैं। भारतीय किसान कठोर परिश्रम करके भूमि पर कृषि करते हैं, तब जाकर देषवासी अन्न को ग्रहण कर पाते हैं। परन्तु किसानों का जीवन प्रारम्भ से ही संकटों और अभावों से ग्रस्त रहा है क्योंकि इन्हें इनकी फसल की सही कीमत नहीं दी जाती जिससे किसानों के आत्महत्या के आँकड़ें लगातार बढ़ते जा रहे हैं। किसानों को निरन्तर सरकार, विचौलियों और प्राकृतिक आपदाओं के साथ जूझना पड़ता है। निरक्षरता और निर्धनता के कारण ऋण के बोझ से दबा कुचला किसान वर्ग गजदूर बनने को विवष हो जाता है। षिवमूर्ति द्वारा चित्रित उपन्यास 'आखिरी छलांग' मे वह ऐसे किसान का उल्लेख करते हैं जिसका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष से भरा हुआ है। किसान अपनी जवान बेटी का विवाह कराने में तथा अपने बेटे की पढ़ाई की फीस चुकाने में भी सक्षम नहीं है। छोटी से छोटी जरूरतों की पूर्ति के लिए आए दिन उसे अपने खेत गिरवी रखने पड़ते हैं। परिणामस्वरूप यही ऋण उसके गले का फंदा बन जाता है। उपन्यास का पात्र पहलवान पूरे मनोबल को एकत्रित कर और दृढ़ संकल्पी होकर अपने जीवन की आखिरी छलाँग लगाता है। ताकि वह कुछ प्राप्त कर सके। परन्तु आखिर में भी उसके जीवन में मात्र असफलता का ही आगमन होता है।

Keywords: *निरक्षरता, अभिन्न, निर्धनता, आपदाओं,सक्षम, अभाव, मनोबल, दृढ़ संकल्प।*

Article Publication

Published Online: 15-Sep-2021

***Author's Correspondence**

शिवाली शर्मा

पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), सेट, हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू – 180006

shivalisharma1000[at]gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i09.017

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

भारतवर्ष का ग्रामीण समाज मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। भूमि प्रकृति का उपहार है जो मानव श्रम द्वारा कृषि योग्य बनाई जाती है। जिसमें से 70 प्रतिशत भू–भाग पर खेती की जाती है। भारत पर अनेक सत्ताधारियों ने शासन किया। मुगल और ब्रिटिश सत्ता का प्रभाव भारत पर प्रमुख रहा। भारतीय भरणपोषणात्मक ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था ब्रिटिश युग के आते ही बाजार अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई। अँग्रेजों ने सत्ता में काबिज होते ही कृषि अर्थव्यवस्था की जड़ों को हिलाकर रख दिया। अँग्रेजी सरकार द्वारा रैयतवाड़ी तथा जमींदारी नीतियाँ लायी गयीं जिनसे भूमि को निजी सम्पत्ति बनाया गया तथा किसान को नकदी फसल पैदा करने के लिए बाध्य किया गया। परिणामतः किसान साहूकारों और पूँजीपतियों के पास ऋण लेने के लिए जाने लगे। ऋण के भार से दबे होने के कारण कालांतर में वह भूमिहीन होने लगे और अन्ततः उन्हें खेतिहर मजदूर बनने पर विवश किया गया। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे – अकाल, बाढ़ आदि ने भी कृषकों की स्थिति को निरन्तर गिराने का कार्य किया है अशिक्षा और निर्धनता ग्रामीण जन पर विशेष प्रभाव डालती है। परिणामस्वरूप वह सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत प्राकृतिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक जानकारी से भो वंचित रह जाते हैं।

> "ब्रिटिश पूँजीवाद ने भारत को उपनिवेश के रूप में परिवर्तित कर दिया जो विदेशी पूँजीवाद की माँगों की पूर्ति के लिए उत्पादन करती है। यही दास्ताँ हमारे आर्थिक विकास में रूकावट डालती है तथा सीमित करती है।"[1]

आधुनिकीकरण और पाश्चात्य संस्कृति में किसान के जीवन की दशा एवं दिशा को शिवमूर्ति ने अपने उपन्यास 'आखिरी छलाँग' में गम्भीरता से चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास कृषक जीवन के यथार्थ को सजीव रूप से

वर्णित करता है। शिवमूर्ति जब गाँव और खेतिहर किसान को वर्णित करते हैं तो प्रतीत होता है कि उनके अन्दर का किसान आज भी जीवित है। शिवमूर्ति मानते हैं कि भारतीय किसान की दुर्दशा का कारण महँगाई, बढ़ती दरिद्रता और भूमण्डलीकरण की आँधी के साथ–साथ प्रशासन का कोप और भूखमरी है। इन परिस्थितियों से आखिर में हारकर किसान आत्महत्या की ओर मुड़ता दिखाई देता है। उपन्यास का नायक पहलवान एक कृषक है, वह परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए घर का अनाज, पत्नी के गहने और अन्ततः खेत तक बेच डालता है, पर ऋण से उऋण नहीं हो पाता। आज भी कृषक ही नहीं, किसानों की अनगिणत पीढ़ियाँ परिवर्तन का मात्र इंतजार कर रही हैं। सभी गाँव के लोग पहलवान को ढाँढ़स बँधाते हुए कहते हैं। उपन्यास की पंक्तियाँ मार्मिक हैं –

> "किसान के घर में जन्म लेकर न पहले कोई सुखी रहा है न आगे कोई रहेगा। इन्हीं परिस्थितियों में जिंदगी की नाव को खेना है।"[2]

पहलवान अपने बीते दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि वह कभी फौज की ओर आकर्षित हुए थे पर अपने परिवार के अकेले पुत्र होने के कारण उन्हें गाँव में रहकर किसान ही बनना पड़ा और पिता की मृत्यु के बाद उनके भविष्य पर मुहर लग गई। वह एक कुशल जोता बनना चाहते थे और कुछ देर के लिए अच्छी पैदावार के कारण पुरस्कृत भी हुए, लेकिन सरकार की नीतियाँ और गन्ने का बकाया अनेक सालों तक लटका रहा, जिससे उनकी स्थिति और भी दयनीय हो गई। उपन्यास का नायक पहलवान कहता है –

> "सचमुच क्या है किसान की जिंदगी? एक कोना डाँकिए तो दूसरा उघार हो जाता है।"[3]

भले ही परिस्थितियाँ पहलवान के प्रतिकूल हैं पर वह जागरुक हैं और अपनी दयनीय स्थिति का कारण जान चुका है इसलिए वह व्यवस्था पर क्रोधित है। वह विचार करता है कि यह लोग सरकार के आदमी होकर भी फिजूल खर्ची करते हैं वह इन सबको दण्डित करना चाहता है वह चाहता है कि फर्जी मुकद्दमें में फँसाने वाले को पीटे। 15 से 16 रुपये की लागत से पैदा होने वाली गेहूँ का समर्थन मूल्य 8 से 10 रुपये तय करने वाले को पीटे और अन्त में वह सोचता है कि यह सारी व्यवस्था ही खोखली है जिसके संघर्ष के लिए उसकी लाठी बहुत छोटी है। पहलवान मन ही मन सोचता है कि काश उन्हें समय रहते किसी ने आगाह कर दिया होता कि खेती से पेट भरने का आसरा छोड़कर पढ़ाई लिखाई का भरोसा करे। मामूली चपरासी की जिंदगी भी औसत किसान की जिंदगी से बेहतर होती है। वर्तमान में भारत एक प्रगतिशील देश ह परन्तु वहीं दूसरी और किसान विलुप्तता की ओर कदम बढ़ा रहा है। सरकारी नीतियाँ तथा बाजारवादी व्यवस्थाएँ किसानों को भ्रमित कर रही हैं। किसान कठोर परिश्रम करके अन्न उगाता है, जिस पर समूची मानव जाति के साथ–साथ पशु–पक्षी भी निर्भर हैं। यही उनके जिजीविषा क आधार हैं। यदि पिछले पंद्रह–सालों में विचार करें तो ज्ञात होगा कि महाराष्ट्र और विदर्भ के किसान आत्महत्या से सबसे अधिक प्रभावित हैं। उपन्यासकार शिवमूर्ति ने 'आखिरी छलाँग' में किसान की वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास का नायक पहलवान जो एक गरीब किसान है वह अपनी बेटी के विवाह के लिए अनेक दरवाजे खटखटाता है वहाँ उससे मोटे दहेज की माँग की जाती है जिससे विचलित होकर वह दो टूक लड़के वालों को सुनाता हुआ कहता है –

> "तीन लड़के हैं, तीनों को नीलामी पर चढ़ा दीजिए तो घर में सात पुरखों से जड़ जमाए दलिदर भी भाग जाएगा और पक्की कोठी भी खड़ी हो जाएगी।"[4]

अपनी परिस्थितियों से हारकर पहलवान पांडे बाबा को याद करते हैं जिन्होंने बैंक मैनेंजर के प्रलोभन में आकर अपने बेटे को ऋण लेकर ट्रैक्टर ले दिया पर वह ऋण को चुका नहीं पाए जिसके कारण वह डिप्रेशन में चले गए वह रास्ते में मिलने वाले हर व्यक्ति से लिपटकर रोते थे और अन्ततः उन्होंने आत्महत्या कर ली। यह सोचकर पहलवान कहता है –

> "जो ऋण किसान की भलाई के लिए दिया जाता है वहीं उसके गले का फंदा कैसे बन जाता है।"[5]

पांडे बाबा अब रोज पहलवान को सपने में दिखते हैं और साथ ही उसे वो तमाम किसान भी दिखाई दे रहे हैं जिन्होंने अपनी जान गवाँ दी उसे अलग–अलग रस्सियों में टँगे बीसो घण्टे व्यंग्य की हँसी करते हुए दिखाई देते हैं। किसी के सिर पर महाराष्ट्रियन पगड़ी थी। किसी के सिर पर कठियाबाड़ी कोइ औड़िया बोलता है तो कोई कन्नड़। पांडे बाबा की बरखी पर सारे किसानों को एकत्रित कर उपन्यास के पात्र खिलावन के माध्यम से किसानों में जागरुकता का संचार किया है। ताकि उन्हें वर्तमान परिस्थितियों से अवगत कराया जाए।

एक दिन पहलवान के साले साहब उनके पास आकर उन्हें उनका बेटा जो इंजीनियरिंग कर रहा है उसकी शादी किसी अमीर घर में करवाकर अच्छा दहेज, बेटे की नौकरी और उनकी बेटी की शादी की तरकीब लड़ाते हैं। पर पहलवान साफ इंकार कर देते हैं और उनका बेटा भी शादी के लिए नहीं मानता। पहलवान गहरी निराश में डूब जाते ह और एक दिन अचानक उनके कदम अपने आप उसी मैदान में पहुँच जाते हैं जहाँ वह कभी दौड़ लगाते थे एक बार फिर उस मैदान में दौड़ लगाकर वह अपने आप को चुनौती देना चाहते हैं कि क्या अभी भी उनके अन्दर की क्षमता बची है बड़ी छलाँग लगाने की? उनकी इसी छलाँग को आज उनके गाँव का पढ़ा लिखा युवक पी.सी.एस. देखता तो कहता –

"यह मौत के खिलाफ लगायी गयी छलाँग है ... आखिरी छलाँग।"[6]

इस दौड़ के साथ पहलवान अनेक चिंताओं में घिरे हैं जैसे खेत रेहन होने की चिंता बेटी के ब्याह की चिंता, बेटे के फीस की चिंता, ट्यूबवैल के बिल की चिंता और यही चिंताएँ किसान की आत्महत्या का कारण बनती हैं। किसान आत्महत्या एक ज्वलंत विषय है क्योंकि यह एक राज्य की या गांव की बात नहीं, बल्कि पूरे देश की बात है जिसमें विभिन्न राज्यों में असंख्य किसान अपना जीवन गवाँ चुके हैं और इसके पीछे कारण हैं सरकार की कठोर नीतियाँ, बाढ़, अकाल तथा अपने परिवार के प्रति उनके दायित्त्व का निर्वाह न होना। इसी वजह से आज किसान अपने बच्चों को किसान नहीं बनाना चाहते क्योंकि किसान का सम्पूर्ण जीवन चिंता में ही बीत जाता है उसे हर छोटी–छोटी जरूरत के लिए अपने खेत को गिरवी रखना पड़ता है। किसान की चिंता का कारण खेती में निरंतर आती गिरावट, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी, जनसंख्या की निरंतर वृद्धि, सरकार का किसानों के प्रति उदासीन रवैया, किसानों पर कर्ज का बोझ, साहूकारों द्वारा किसानों का शोषण बाढ़ अकाल तथा अपने परिवार का खर्च न उठाा पाना उसकी आत्महत्या का कारण बनता है।

संदर्भ

1. ए.आर. देसाई, भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र, पृ. 102
2. शिवमूर्ति, आखिरी छलांग, पृ. 83
3. वही, पृ. 92
4. वही, पृ. 88
5. वही, पृ. 99
6. वही, पृ. 108